कोवलजहांजिनबिंबतिष्टताहोइतहांनहोइ तीस्योंथेआस्योंदिशानेंसुंदराकारजि
नबिंबस्थापि रजाकरियज्ञकीविधिथेकरी योउपायकालासुरबतायो तादियांयो
हीउपायकीयो फेरिविद्याधरांकोअधिपनागकुमारदेवांनेलेयज्ञविघ्नकरिवानेंआ
यो सोजिनबिंबांनेदेषिवाऊफिजायनारदनेंकहतोहूवो जोजहांजिनेश्वरदेवकीप्र
तिमांहोइ तहांम्हारीविद्याकोवसायनहीं तीस्योंआपणेंस्थांनकजांऊंछूं याकहि
करिनिजभुवनगयो तेंगपाछेपरवतकृतयज्ञनिरविघ्नहूवो कालपायविश्वभूति
पर्वतमरिकरिसातवेंनरकिगया तेतीससागरपर्यंतमहादुखकलेसभोगवेलान
कोंकादुखांकोवर्णनकहांतककहिजे जिनआगमथकीजांणिलेणों अथानंतर
महाकालासुरसगरविश्वभूत्यादिकसर्वआपणांशत्रुवर्गनेंहति नरकमैंबोलिमा
याषोलिनिजदेवरूपधरिलोकांप्रतिकहतोहूवो हूंपूर्वभवविषेमधुपिंगलनां
मपोदनापुरकोराजाछो सोमैंपापीसुलसाकेनिमित्तिदानकरिमहापापउपार
ज्यो तीस्योंअबथेहिंसामार्गछोडि अहिंसालक्षणजिणप्रणीतधर्मअंगीका
रकरो जोसुखचाहोछोतोहिंसामतिकरौंइत्यादिककहिकरिअदृश्यहूवो पाछेद
यावंतहोयआपणीदुष्टचेष्टाकोवहोतनिंदागरहाकरिप्रायश्चित्तलीयो जिहिंक

तौकहैंवसुस्वर्गगयो॥केतायककहैंनरकगयो॥ईभांतिविसंवादमांनलोकांसहि
ताविश्वभूतिप्रयागजाइकरिराजसीयज्ञकीविधिकरतोहुवो॥महापुरकाराजा
नेंआदिदेजेधर्मात्माछासांपंचहोतनिंद्यो॥तवभीविश्वभूतिकेजिनधर्मकीप्रती
तिनआई॥अरकेताइकजेभलाप्राणीछा॥तेकुमारगछोडिभगवंतप्रणीतशुद्ध
मारगविषेप्रवर्त्या॥नारदजीधर्मकीमर्यादाराषी॥सोईवातकरिजेपद्मराजाजि
नधर्मीछा॥तेवहोतहरषितहुवा॥नारदजीकीप्रसंसाकरिगिरितटनांमनग
रकोराजदीयो॥अथानंतरनारदजीएकदिनदिनकरदेवनांमविद्याधरनेंक
ही॥होमित्रजिहितिहिंउपायकरिनूपर्वतकुतअमार्गनैनिवारि॥तववेंकही॥
थोंही करिस्यों॥नारदनेंईभांतिकहिकरिविद्याकीसमर्थतासोंनागकुमारदेवां
नेंबुलाया॥महाकालासुरकौंअरपर्वतकौसर्वप्रपंचकह्यो॥तवनागकुमारदे
वांजायसंग्रामविषेमहाकालासुरनेंभगाययज्ञविध्नकीयो॥तवविश्वभूतिअ
रपर्वतदस्या॥सरणढूंढताफिरेछा॥तवहीमहाकालासुरनेंआगेंतिष्टतोदेख्यो॥
सर्ववृत्तांतवेनेंकह्यो॥तववेंकही॥महांकादेषीएनागकुमारछै॥त्यांयोउपद्रव
कीयोछै॥सोअवथेएकउपायकरो॥विद्यानुवादपूर्वविषेकहीछै॥नागविद्याता

आकास विषै तिष्टता देव विद्याधर कहता हुवा॥ अहो वसु नरेंद्र महाबुद्धिवान औ
सौधर्म विध्वंसन मार्ग तू मति प्ररूपै॥ यो वचन कहता ही थारी ईया दशा हुई एव
न देव विद्याधर कहता हुवा॥ सिंहासन नै नै भूम्यां वसु अर पर्वत म्लान मुख हुवा॥ त
ईभांति देषि महाकालासुर का किंकर तापस को रूप धरि कहता हुवा हे वसु
राजन है पर्वत थे भय मति करो ऐसो कहि करि माया सों राजा नैं उगर करि चौकी यो
तब वसु मूरिष कहतो हुवो॥ हूं तत्व को वेत्ता छौं॥ कांई डरपो छौ॥ पर्वत को वचन सत्य
ताणौं॥ तब कंम्पयमान भूमि में धस्यौ॥ असी दशा देषि नलाउ रिषि कहता हुवा॥ हे नृप
ति ईं मिथ्यावाद करि थारी या अवस्था हुई॥ तीसों अब भी मिथ्या मारग नैं तजि॥ जि
नधर्म को अंगीकार करि॥ ई भांति साधु पुरषां प्रार्थना करी॥ तो भी मूर्ख यज्ञ हीनैं ध
र्मवता वतो हुवो॥ तब समस्त देहनू भूमि में धसि गई॥ रौद्रध्यान सों मूवो॥ सातवें नर
कि गयो॥ तब कालासुर लोकनैं प्रतीति उपजावा निमित्त गगन विषै विमांण में वैठ
॥ सगर अर वसु दोन्यों माया करि दिषाया॥ सो कहता हुवा॥ हे यज्ञ की श्रद्धा करि
स्वर्गलोक विषै उपज्या सुख भोग वांछौं॥ तीसों नारद का वचन मां नियज्ञ धर्म
मो मति पर्वत का वचन सत्य छै॥ ई भांति कहि अदृश्य हुवो॥ अब के तायकलो

थेम्हांकोसंसयदूरिकरो॥नारदतौनिश्चयकरिअहिंसाहीनैंधर्म्मरूपेछै॥अरप॥
र्वतहिंसाधर्म्मनिरूपैछै॥सोयांदोन्यांमैसांचोकुण सोथेकहो॥तदवसुपापी॥अर
नीरकैदेवअध्यायककोउपदेशदयारूपछौ॥तिहनैंजांणतोथकोभी॥पर्वतक
माताकीप्रार्थनाकावशथकी॥नरकजांणहारतिहथकी॥कलिकालकानिक
टिआवाथकी॥हिंसानंदरौद्रध्यानविषैतत्पररूवो॥अधर्म्मीपर्वतकावचननै
सत्यकहतोरूवो॥अरकहीउत्पत्तवस्तुविषैसंदेहकांई॥पर्वतोत्यज्ञफलक
रिस्त्रीसहितराजासगरस्वर्गलोकप्रापतरूवो॥तीस्योंजलनादीपनैंअरकोणप्र
कासै॥पर्वतकोकह्योस्वर्गकोसाधनछै॥थेमयछोपिपर्वतकोकह्यो प्रमांणकरो
एवचनवसुकह्या सोहिंसानंदमृषानंदरौद्रध्यानकरिनरकायुबांधी॥जदवसु
कामुखथकीऐसापोटावचननिकस्या॥तदआकासविषैऐसीध्वनिहुईमानैं
ब्रह्मंडफाटै॥अरयाअकस्मात्वाणीहुई॥अहोनारदअहोतापसा॥पृथ्वीपतिका
मुखथकीअसाधोरअनर्थवचननिकस्या॥तीस्योंनदीउलटीवहिवालागी॥सरो
वरसूकिगया॥रुधिरकीवर्षाहुई॥सूर्य्यकीकिरणिमंदपडी॥सर्वदिशामलीन
हुई॥एतीविपरीतिवातहुई॥अरधरतीफाटी॥सोवसुकोसिंघासनदबिगयो॥

तोनैं योसो प्योछो॥ तीस्यों ईकी प्रतिपालण्यां तोनैं करिवो जोग्य छै॥ नारद को अर
ईकौ थाके समीप वाद होयलो॥ सो जो ईको भंग हूवो तो यो जीवै कोई नहीं॥ याव
तनी कजांणे॥ अर ईकै थां विनां और कोई कोसरणे नहीं॥ एवचन ब्राह्मणी का
सुणि करि वसु कहतो हूवो॥ हे मात हूं तो गुरु को सेवक छूं॥ अर गुरु समान गु
रु का पुत्र नैं जांणो छो॥ हूं नीतिवान छूं थे मो नै कांई कहो छो॥ जि हि मैं ईकी ज
हो मी सो ही करिस्यो॥ थे भय मति करो॥ ई भांति कहि संतोषी॥ अब दूसरै दिन
विश्वभूत्यादिका सर्व वसु राजा नैं वैसिंहासन वेगे देषता हूवा॥ विश्वभूति श्रद्धा
तो हूवो॥ हे राजन थां का वंश सर्व ही राजा अहिंसा ही धर्म्म विषे तत्पर हूवा॥ राजा हि
मगिरि महागिरि समगिरि वसुगिरि ए राजा हरिवंसी आगे हूवा॥ तिहिं वंस वि
षै विश्ववसु महाराजा हूवो॥ तिहिं का पुत्र थे राजा वसु हूवा॥ सो आगे तो सर्व ही
राजा अहिंसा धर्म्म विषे प्रवर्त्या॥ अब थे अहिंसा धर्म्म की रक्षा विषे कांई उपदे
श द्यो छो॥ सत्य का प्रभाव थकी गगन में तिष्टो छो॥ सो थां की प्रभुता सगले
व्यात छै॥ संदेह का दूरि करिवा नैं समर्थ छो॥ जैसैं आगि की किणगी स्यों रूई
पुंज छिणमात्र में भस्म होय॥ त्यों थां का वचन संदेह नैं दूरि करै छै॥ तीस्यों हे प्रभो

रषांकों कह्यो छै॥ ज्ञानवांनां करि निंद्य छै। याठीक जांणो। जौ जीवनैं शस्त्रसों घाति
वा को पाप छै॥ तीसों अनेक गुणों पाप मंत्रादिक करि घात को जांणो॥ हिंसा मैं कदाचि
धर्म्म नही॥ अहो जे मूरिष हिंसा मैं धर्म्म मांनै छै॥ ते अग्नि विषै कमल को वन उपजा
यो चाहे छै॥ अर सूर्य का अस्त थकी दिवस मानै छै॥ अर सर्प्प का मुख थकी अमृत वां
छै छै॥ अर कलह करि सुजस चाहे छै॥ अर कालकूट जहर षाइ जीवो वांछै छै॥ सो
कदाचि यो न होय॥ अहो जो कदाचि पाषांण जल विषै तिरै॥ सूर्य्य पश्चिम दि
सा मैं ऊगे॥ अग्नि मैं शीत गुण होइ पृथ्वी तलउलटै॥ एता कार्य न कै वा का छै सो
नी होय तो होय॥ परंतु जीव की घात सों कदाचि धर्म्म न होय॥ इत्यादि नारद
जी बहोत कथन कीयो॥ सो कहां तक लिषि जे॥ ऐसा नारद का वचन सुणि स
र्वही सभा का लोग संतुष्ट हूवा॥ विश्वभूति कही॥ जो वसु राजा कहै सो प्रमाण
॥ तव नारद पर्वत और विश्वभूत्यादिक सर्व ही स्वस्तिकावती नगरी नैं चाल्या
सो केताय क दिन मैं जाय पहूंच्या॥ तव पर्वत पापी घरि जाइ सगलो वृत्तांत मा
ता नैं कह्यो॥ वा पापणी पुत्र सहित राजा वसु कनैं जाइ कहती हुई हे पुत्र वसु
यो पर्वत मंदबुद्धि अर मंद भाग्य छै॥ सो थारो गुरु जव तपलै वा लागो॥ तव ही॥

शे पिता सो ही म्हां को अरयां को गुरु। और कोई गुरु नहीं। सो यो नारद नै मो सौं दे
षराये छै। अब भी षेष करि कहै छै। सो ई कौ कह्यो कांई होय छै। म्हारा पिता को ध-
र्म को भाई स्थविर नां मां जग में विष्यात छै। तिहिं भी वेद को रहस्य यज्ञ धर्म बता-
यो छै। यज्ञ मृत्यु को फल स्वर्ग कह्यो छै। अर मैं भी ई मारग नैं प्रगट कीयो। सो ई को
फल तैं भी प्रत्यक्ष देष्यो ही। अर अजहूं भी तो नैं प्रतीति न आई। तो सर्व शास्त्र
का पारगामी राजा वसु नैं पूछो। जो सत्य का म्हात्म करि आकास विषै तिष्टि र है छै
ए वचन नारद सुणि करि कहतो हुवो। कांई दोष छै। वसु ही नैं पूछि ज्यो। परंतु प्रथ-
म तो या विचारो। जे जीव वध सो धर्म छै। तो अहिंसा दान शील तप क्षमा इत्यादि
शुभ आचार थकी अधर्म होसी। अर जो यो ही गहरी तो सकल मलेछ पापी जी-
वा नै परम गति होसी। सत्य शील संतोष दया का धारक पुरुषा नैं अधोगति होस १
। सो यो कदाचि न होइ। अर जो कहो कि जज्ञ विषै जीव को घात धर्म छै। और
ठौर पाप छै। सो पीड़ा तो जीव नैं हति वा मैं सर्वत्र समान छै। कौतक प्रवत जाणि
वा मैं न आयो। तीस्यों जीव नैं पीड़ा समान छै। तो पाप भी समान ही जाणिवो। अ-
र थे या कहो छो। पशु जीव भगवान जज्ञ का होम ही नैं निपजाया छै। सो आगम मू-

नहितछैदयामुक्तिकीसषीछै॥कल्पतरुकीवेलिछै॥सुखकीदाताछै॥नरककीघा
ताछै॥ऐसावचनस्वआचार्यांकह्याछैसोप्रमांणछै॥तीस्योंहेविश्वभूतिराजन्
पापकर्मकोनिर्बंधन॥पुन्यधर्मकोनिकंदन॥शीलसंतोषादिसत्कर्मकोभं
जन॥ऐसोजोजज्ञअधर्महिंसारूपसोतूंछोडि॥अरजेतापसदिगंवरछैत्यां
कोउपदेस्योदयाधर्मअंगीकारकरि॥एवचननारदजीकाविश्वभूतिसुणि
करिकहतोहूवो॥जोगारमैतोयोधर्मसाक्षातसुर्गसुखकोसाधनदेषिअं
गीकारकीयोछै॥क्योंकरितजों॥नारदकहीहेनृपतितूंतोपंडितछै॥सतअसतको
ग्याताछै॥कांईयोउकर्मकोस्वर्गकोसाधनछै॥कोईराक्षसजोपरिवारसहितस
गरकोनासवांछैछै॥तिहिपापीयोउपायकीयोछै॥मूर्षानैंभ्रमकोंकारणमाया
करीछै॥तीस्योंतूंसर्वथाप्रकारयाप्रतीतिछोडि॥अरदयाक्षमाशीलसंतोष
उपवासादिकासाधुपुरुषांकोकह्योमारगछै॥सोतोनैंअंगीकारकरणों॥ऐ
साशब्दनारदकाविश्वभूतिसुणिकरिपरवतनेंकहतोहूवो॥भोपर्वतनारदई
भांतिकहैछै॥सोतैंसुण्या॥तबपर्वतपापीअसुरेकउशास्त्रकरिमोहितहूवो
थकोउरघुद्धिकहतोहूवो॥अहोराजनयोशास्त्रकांईनारदसुण्योंछैम्हा

र्म्मकाप्रभावस्यौंम्हे यज्ञमस्वर्गप्राप्तहूवा॥सुखभोगवांछो। एवचनमायाकृतसगरसुल
साकाविश्वभूतिसुणिकरिभूरिषिसत्यजांणियज्ञअधर्म्मकोउद्यमकीयो।महाकाला
सुरपापीजोजीवजज्ञमैहोम्यांछा।सोसगरकाविस्वभूतिकापितरादिकआकासविषै
विमांणवेगप्रगटदिषाया।तेकहताहूवा।हेविश्वभूतिधंन्यवांन।तेमहायज्ञकी
यो।थाराप्रशादकरिम्हेसर्ब्बस्वर्गहूवा।सुर्गलोककासुखपाया।असावचनवांका
सुणिकरिमहाकालासुरकीमायामैंभूलिभूरिषविश्वभूतिएसर्ब्बवातसत्यमांन
हूवो।हिंसाहीमैंधर्म्ममांन्यो।अथानंतरयोसर्ब्बवृत्तांतनारदसुण्यों॥जोपर्ब्बत
पापीकुमारगकोअधिकारीहूवो।हिंसाधर्म्मलोकमैंप्रकास्यो।तबनारदविचारी
।धिक्कारहोहयपरवतनैं।।जिहिंपापीअसोविपरीतधर्म्मथाप्यो।अबजिहितिहिउपाय
करियोकुमारगदूरिकरणों।नारदधरमात्मांअसीमनमैंधारी।अजोध्याआयोसो
स्वभूतिसौंमिलिकरिकहतोहूवो।हेराजनजेपापीनरछैतेभी।अर्थकैनिमि
मकैअर्थिप्रांणघातनकरैंकोईवीतीनकालमैंधर्म्मकैनिमित्तजीववधकरैछै।या
तेअजांणभीजांणैं।हिंसाथकीधर्म्मकदाचिनहोय।अहोपरवतजोपरवृत्त
वांनकोनिरूप्योवेदछै।तिहिविषैएकअहिंसाहीधर्म्मकह्योछै।दयामातासमां